

प्रश्न - ईसाई धर्म का परिचय देते हुये इसकी विशेषताओं को स्पष्ट करें।

उत्तर - ईसा पूर्व 5 या 6 वी शताब्दी में येरुशलम के बेथलेहेम स्थान पर ईसा मसीह का जन्म होता है। यह माना जाता है कि ईश्वर ने स्वयं अपने स्वर्गदुत जिब्राईल को मरियम के पास सन्देश देने भेजा। स्वर्गदुत जिब्राईल ने कहा परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है तेरा एक पुत्र उत्पन्न होगा उसका नाम यीशु रखना। यह परमेश्वर पुत्र कहलाएगा।

ईसा मसीह के जन्म के पूर्व रोमन साम्राज्य में यहूदियों का शासन था तब वहां बहुदेववाद की मान्यता थी और अनेक कर्मकाण्डों का पालन किया जाता था। ईसा मसीह ने यहूदी धर्म का नया रूप प्रचारित करना शुरू किया। यहूदियों के कट्टरपंथी रब्बियों (धर्मगुरुओं) यह सही नहीं लगा। उन्हें अपने कर्मकाण्डों से प्रेम था। उन्होंने ईसा मसीह का विरोध किया और रोमन गवर्नर से शिकायत कर दी। उसने ईसा मसीह को क्रूस (सलीब) पर दर्दनाक मौत की सजा सुनाई। ईसाई धर्म में यह विश्वास है कि ईश्वर ने ईसा मसीह को लोगों के पापों के लिए क्रूस पर लटु बहाने के लिए ही भेजा था। उनका जन्म ही उद्धारकर्ता के रूप में हुआ था। यीशु मसीह के बलिदान की कथा अत्यन्त दर्दनाक है। उन्हें कांवा का ताज पहनाकर अनेक मारनाश देकर मृत्युदंड दिया गया। किन्तु मृत्यु के तीन दिन बाद

इसामसीह बापिस अवतरित हो उठे। इसामसीह जिस दिन जी उठे उसे ईस्टर का दिन कहा जाता है तथा उनकी मृत्यु के दिन को गुड फ्रायडे ~~कहा~~ जन्म दिन को क्रिसमस के रूप में याद किया जाता है। इसामसीह के 12 शिष्यों ने इसामसीह की धार्मिक मान्यताओं को सभी जगह फैलाया धीरे धीरे यह सारी दुनिया पर हा गया तथा इसाई धर्म फैलाया।

इसाई धर्म की पवित्र पुस्तक वर्णित है। वाइबिल के दो भाग हैं पहला भाग ओल्ड टेस्टामेंट तथा दूसरा भाग न्यू टेस्टामेंट कहलाता है।

ओल्ड टेस्टामेंट में इसामसीह के जन्म के पूर्व मानी जाने वाली यहूदी धार्मिक परंपराएं हैं तथा न्यू टेस्टामेंट में इसामसीह के जीवन दर्शन संबंधी घटनाओं का उल्लेख है। यह माना जाता है कि लगभग 40 लोगों ने वाइबिल को पूर्ण किया तथा लगभग 1400 वर्षों में यह लिख गई है। इसे इसाई धर्म की सबसे प्रमाणिक और मूल ग्रन्थ माना जाता है।

ईसाई धर्म को निम्नलिखित विशेषताओं से समझा जा सकता है -

- 1 - ईसाई धर्म में ईसा मसीह को ईश्वरपुत्र तथा उद्धारकर्ता कहा गया है।
- 2 - ईसाई धर्म तीन सत्ताओं में विश्वास करता है।
- 3 - ईसाई धर्म में ईश्वर से प्रेम के अलावा अपने पड़ोसी से प्रेम की बात कही गई है।
- 4 - ईसाई मत में विश्वास और प्रार्थना प्रमुख हैं।
- 5 - ईसाई धर्म में सेवा और कफ़ों को भी महत्वपूर्ण मूल्या माना जाता है। और कम
- 6 - ईसाई धर्म के अनुसार व्यक्ति द्वारा पापों का प्रायश्चित और क्षमा करने पर कयामत के दिन परमेश्वर से अनुग्रह प्राप्त हो सकता है।

उपर्युक्त विशेषताओं की व्याख्या इस प्रकार है -

- 1 - ईसाई धर्म में ईसा मसीह को ईश्वरपुत्र तथा उद्धारकर्ता कहा गया है - यीशु ही ईश्वर के एकमात्र पुत्र हैं तथा यीशु धरती पर लोगों को राह दिखाने उनके पापों पर बहुत बहाने के लिए जन्म लिए हैं। यीशु क्योंकि ईश्वरपुत्र हैं तो ईश्वर से भिन्न नहीं हैं। धरती पर परमेश्वर पुत्र आने की यह अवधारणा, मानव जीवन के धार्मिक

होने का संदेश देती है तथा यह स्पष्ट करती है कि धर्म ही मानव जीवन हेतु एकमात्र सच्चा मार्ग है और परमेश्वर पुत्र पर विश्वास करना, उसके उपदेशों का वातन करना अनन्त जीवन का मार्ग है।

२- इसाई धर्म तीन सत्ताओं में विश्वास रखता है - इसाई मतानुयायी तीन सत्ताओं के प्रति आस्था रखते हैं - परमेश्वर, परमेश्वर पुत्र तथा पवित्र आत्मा। परमेश्वर सृष्टिकर्ता है तथा परमेश्वर पुत्र मनुष्यों के साथ रहते हैं पवित्र आत्मा में परमेश्वर का सामर्थ्य और शक्ति है। वास्तव में ये तीन तत्व भिन्न भिन्न ना होकर परमात्मा के ही स्वरूप के अन्तर्गत हैं या यह कह सकते हैं कि इसाई मत में परमेश्वर एक ही है और ये उसके 3 भागों का प्रकटीकरण हैं।

३- इसाई धर्म में ईश्वर के प्रेम के अलावा अपने पड़ोसी में प्रेम की बात कही गई है। इसाई मसीह का यह सर्वप्रमुख आदेश है कि परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख और उसके अलावा अपने पड़ोसी अर्थात् अन्य सभी के साथ वैसा ही प्रेम करना चाहिए जैसा हम स्वयं से करते हैं। इस प्रकार इसाई धर्म में प्रेम ~~एक~~ ईसाई मूल्यपूर्ण जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण अंग है।

4- ईसाई धर्म में विश्वास और प्रार्थना प्रमुख हैं- यह विश्वास ईसाई मत की नींव है- यीशु ने परमेश्वर पर विश्वास रखने और भौतिक वस्तुओं की चिंता न करने पर जोर दिया है। इस विश्वास के साथ प्रार्थना का साथ है। यीशु ने प्रभु की प्रार्थना सिखाई। ये प्रार्थना इस प्रकार है - हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाय। तेरा राज्य आय। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है वैसे प्रथ्वी पर भी हो। हमारी प्रतिद्वन्द्वि की रोटी आज हमें दे। हमारे अपराधों को क्षमा कर, जैसे हमने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है। हमें परीक्षा में ना जल, परन्तु बुराई से बचा। "

5- ईसाई धर्म में सेवा, करुणा और दान को प्रमुख मूल्य माना गया है - दीन, दुखी, गरीब, लाचार बीमारों की सेवा, विधवाओं की सुधि लेना, इसके प्रति संवेदना और करुणा का व्यावहारिक रूप आज भी हमें दिखलाई पड़ता है। ईसाई धर्म में केवल यह सेवा ही नहीं बरन इनकी मदद करना, दान देना भी ईसाई आचार व्यवस्था का एक अंग है।

6- ईसाई धर्म के अनुसार व्यक्ति द्वारा पापों का प्रायश्चित्त करना और क्षमा करने पर कयामत के दिन परमेश्वर से अनुग्रह प्राप्त हो सकता है-

ईसाई धर्म में ईसाई जीवनशैली का सबसे अलग 6
प्रकार का व्यवहार प्रायश्चित करना और दूसरों को
क्षमा करना है। यदि कोई गलती हो जाए तो उस
गलती या पाप को स्वीकार कर प्रायश्चित करना और
यदि कोई दूसरा आपके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता
है तो उसे क्षमा करने की महत्ता बताई गई है। चूंकि
मनुष्य पाप के कारण उत्पन्न हुआ और पाप करता है तो
मृत्यु के उपरांत कयामत के दिन उसके कर्मों का निर्णय
लिया जाता है और परमात्मा का अनुग्रह ही ~~उसे~~ उसका
उद्धार कर सकता है।

यही ईसाई धर्म की मुख्य विशेषताएं मानी जा
सकती हैं।